प्रतिमा नाटक

  

जिसकी ऊँचाई हर्म्य से भी अधिक लक्षित हो रही,
प्रतिमा-स्वरूप नरेश दशरथ का सदन यह है वही।
प्रतिहार की आज्ञा बिना जिसमें पथिक हैं आ रहे,
प्रतिदिन प्रणाम किए बिना सेवा-निरत हैं जा रहे॥

  

बलदेव शास्त्री